साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 05
May 2017

किस किस को आजमाऊ मैं

बिनय शर्मा

किस किस को आजमाऊ मैं
किस किस को मनायुं मैं
भर गए है सरे जख्म
मिट गए है सरे गम
पर ये जो दिल है
चाहता है फिर जख्म खायुं मैं
लिखें है कुछ नज्म
और याद आया है ग़ज़ल
चाहता हूँ सुनायुं मैं
तभी अचानक
हुआ तबाही का एहसास
हो गए हम निराश
फिर से क्यों जख्म खायुं मैं
और फिर कैसे मरहम लगायुं मैं
बुझ गए चाहतों के दीयें
खली है मुहब्बत के पायलें
अब जाम चाहत का कैसे छलकायूँ मैं